बहुत रोने का मन करता है

बहुत रोने का मन करता है-

हाँ ,ममा,

आपसे मिलने का जी करता है।

बहुत दिन हो गए-

दिन नहीं वर्षों हो गए,

अब तो आ जाएं-

मुझे मिलने,

अकेले जान मन अस्थिर होता है,

हाँ, माँ आपसे मिलने का जी करता है।

थक गई हूँ –

जीते – जीते,

आपके साथ बातें,

करने का जी

करता है।

हाँ, ममा,

आपसे मिलने का जी करता है।

जानती हूँ आप नहीं

आएंगी-

किंतु न जाने क्यों,

मन अपना ही इस झूठी इच्छा से-

बहलाने का जी करता है

हाँ, ममा आपसे मिलने का जी करता है।

बहुत मुश्किल हो गया है –

अब खुश रहना,

दिखावी मुस्कान से-

मुँह मोड़ने का मन करता है,

हाँ,ममा आपसे मिलने का जी करता है।

स्वयं माँ हूँ –

जानती हूँ ,

जाना है आपकी तरह-

किंतु संतान अपनी को-

छोड़ने से मन डरता है,

हाँ, ममा आपसे मिलने का जी करता है।

क्या मेरे बच्चे भी –

ऐसा सोचते होंगे,

सोच – सोच के –

जीने का मन करता है,

हाँ,ममा आपसे मिलने का जी करता है।

दिन कटता है –

याद कर – करके आपको,

बेटी आपकी हूँ सोच-

मन गर्व करता है,

किंतु

आपसे मिलने का जी करता है।

काश आ जाएं आज –

सपने में मेरे,

इच्छा कर फिर धबराकर कि-

सपना सच होगा या नहीं,

जाग – जाग के-

आपको सोचना अच्छा लगता है,

हाँ, ममा आपसे मिलने का जी करता है।

जीवन एक नाटक है-

हम पात्र है यहां,

जानकर भी अनजान –

जाने क्यूं होने का ,

तर्क न समझ आता है-

बहुत रोने का मन करता है,

हाँ,ममा आपसे मिलने जी करता है।

डॉ. परमजीत ओबराय